BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

संथालों का धार्मिक विश्वास एवं मान्यताओं में आधुनिक बदलाव : एक अध्ययन

दिपा कुमारी
शोधार्थी (UGC NET)
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय,
धनबाद, झारखण्ड

शोध सार :
संथाल भारत के प्रमुख जनजातीय समुदायों में से एक हैं, जिनकी संस्कृति और धार्मिक विश्वास प्रकृति-पूजा और आत्माओं की उपासना पर आधारित हैं। पारंपरिक रूप से यह समुदाय *सरणा धर्म* का पालन करता है, जिसमें *बोंगा* (आत्माओं) की आराधना की जाती है। जल, जंगल और ज़मीन से गहरा संबंध होने के कारण इनके अनुष्ठान और त्योहार भी प्रकृति केंद्रित होते हैं। *सोहराय* और *बाहा पर्व* जैसे उत्सव कृषि और वनस्पतियों से जुड़े हैं, जिनमें पूर्वजों और प्राकृतिक शक्तियों को सम्मान दिया जाता है। हालांकि, बाहरी प्रभावों और आधुनिक जीवनशैली के चलते इनके धार्मिक विश्वासों में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे जा रहे हैं। शिक्षा के प्रसार और सरकारी योजनाओं के तहत संथाल समुदाय में वैज्ञानिक सोच विकसित हो रही है, जिससे कुछ पारंपरिक मान्यताओं में बदलाव आया है। शहरीकरण और रोज़गार के अवसरों के कारण कई संथाल शहरों में बस गए हैं, जहाँ वे आधुनिक जीवनशैली और रीति-रिवाजों को अपना रहे हैं। धर्मांतरण भी एक बड़ा कारक रहा है, जहाँ मिशनरियों के प्रयासों से कुछ संथाल ईसाई धर्म को स्वीकार कर चुके हैं, जिससे उनकी परंपरागत आस्थाओं में परिवर्तन हुआ है। इसके अलावा, बाहरी समाज के संपर्क में आने से उनके धार्मिक अनुष्ठानों में लचीलापन देखा जा सकता है, जहाँ कुछ लोग हिंदू परंपराओं या आधुनिक धार्मिक विचारधाराओं को भी अपनाने लगे हैं। इन बदलावों के बावजूद संथालों का एक बड़ा वर्ग अपनी सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं को बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। आधुनिकीकरण के प्रभाव के बावजूद, उनकी धार्मिक पहचान पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है, बल्कि समय के साथ इसमें समायोजन और नए दृष्टिकोणों का समावेश हुआ है।

कुंजी शब्द: संथाल, धार्मिक विश्वास एवं मान्यताएं, आधुनिक बदलाव।

❖ परिचय :

संथाल भारतीय उपमहाद्वीप के प्रमुख आदिवासी समुदायों में से एक है, जिनकी सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक धरोहर गहरी और महत्वपूर्ण है। "यह समुदाय विशेष रूप से झारखंड, बंगाल, उड़ीसा, बिहार और असम के कुछ हिस्सों में निवास करता है।"[1] संथाल समाज की एक विशिष्ट पहचान है और उनकी भाषा, धर्म, कला, संगीत और परंपराओं ने भारतीय समाज की विविधता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।"[2] इस लेख में हम संथालों की स्थिति, उनके इतिहास, संस्कृति, समाज और योगदान को विस्तार से समझेंगे। संथाल समुदाय का इतिहास बहुत पुराना और समृद्ध है। कुछ विद्वान मानते हैं कि संथाल आदिवासी समुदाय का संबंध प्राचीन आर्यन सभ्यता से नहीं है, बल्कि ये समुदाय मूल रूप से भारत के आदिवासी और अस्थायी समाज से संबंधित हैं। संथालों का इतिहास और संस्कृति भारतीय आदिवासी समाज की गहरी जड़ों से जुड़ी हुई है। संथाल समुदाय की उत्पत्ति का सही विवरण उपलब्ध नहीं है, लेकिन कई विद्वान मानते हैं कि यह समुदाय प्राचीन समय में झारखंड, बिहार और बंगाल के जंगलों में रहने वाले शिकारियों और कृषि कार्य करने वालों से विकसित हुआ है। संथालों के पास अपनी अलग भाषा है, जिसे संथाली

@2025 Bihar Shodh Samaagam

(Santali) कहा जाता है, और उनका समाज पारंपरिक आदिवासी रीति-रिवाजों, विश्वासों और तंत्रों पर आधारित है। संथालों की अपनी एक अद्वितीय भाषा है जिसे "संथाली" कहते हैं। यह भाषा ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार से संबंधित है और इसका विशेष रूप से संथाल समुदाय के बीच उपयोग होता है। संथाली भाषा का अपना एक अद्वितीय लिपि है जिसे "ओल चिकी"[3] कहा जाता है। ओल चिकी लिपि का विकास संताली भाषा की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए किया गया था, और यह संथाल समाज के सांस्कृतिक और साहित्यिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। संथालों का साहित्य भी बहुत समृद्ध है, जिसमें उनके लोक गीत, कथाएँ, और शेरो-शायरी शामिल हैं। संथाली गीत विशेष रूप से उनकी जीवनशैली, संघर्ष और आदिवासी संस्कृति को प्रकट करते हैं। संथालियों की साहित्यिक धारा आज भी जीवित है और यह उनके अस्तित्व, परंपरा और संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संथाल समुदाय का समाज मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। वे जमीन के मालिक होते हैं और कृषि कार्य के साथ-साथ जंगल से उत्पाद प्राप्त करने के लिए भी काम करते हैं। उनका समाज बहुत सामूहिक होता है, जहाँ सभी लोग एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करते हैं। संथाल समाज में परंपरागत रूप से पुरुषों की भूमिका खेतों में काम करने और परिवार का पालन-पोषण करने की होती है, जबकि महिलाएँ घरेलू कार्यों में व्यस्त रहती हैं, साथ ही पारंपरिक नृत्य और संगीत में भी भाग लेती हैं।

संथालों का धर्म प्रकृति आधारित होता है। वे अपने देवी-देवताओं की पूजा करते हैं, और उनकी धार्मिकता में बहुत सी प्रकृति और आध्यात्मिकता से जुड़ी परंपराएँ हैं। "संथाल आदिवासी लोग 'महादेव', 'माता तिलोटमा', और 'सिंगीर' जैसी देवी-देवताओं की पूजा करते हैं।"[4] इनकी पूजा से उनके जीवन का उद्देश्य और उनका विश्वास प्रकृति के साथ तालमेल में है। संथाल समाज का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा उनकी पारंपरिक नृत्य और संगीत है। संथालों का पारंपरिक नृत्य 'संथाली नृत्य' के नाम से प्रसिद्ध है। यह नृत्य एक सामूहिक आयोजन होता है, जिसमें पुरुष और महिलाएँ मिलकर अपने पारंपरिक गीतों और नृत्य के माध्यम से अपने जीवन के उत्सव और संघर्षों को व्यक्त करते हैं। इस नृत्य का आयोजन प्रमुख रूप से त्योहारों और धार्मिक आयोजनों के समय किया जाता है। संथालों ने हमेशा अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया है। उनके संघर्ष का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है **संथाल हूल (1855-56)**,[5] जिसे संथाल विद्रोह के नाम से जाना जाता है। यह विद्रोह संथालों द्वारा ब्रिटिश शासन और जमींदारी प्रथा के खिलाफ एक बड़े पैमाने पर किया गया था। संथालों ने अपनी जमीनों पर कब्जा करने और उनके शोषण को रोकने के लिए इस विद्रोह की शुरुआत की थी। हालांकि यह विद्रोह विफल हो गया था, लेकिन "यह संथालों के संघर्ष और साहस का प्रतीक बन गया।"[6] आज भी, संथाल समुदाय अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए संघर्ष कर रहा है। उनका मुख्य मुद्दा भूमि अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, और न्याय की उपलब्धता है। झारखंड, बंगाल और बिहार जैसे राज्यों में संथालों के बीच गरीबी और शोषण की समस्याएँ जारी हैं, जिनके लिए विभिन्न सामाजिक संगठनों और राजनीतिक दलों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं।

❖ **संथालों के धार्मिक विश्वास:**

संथाल समुदाय भारत के आदिवासी समुदायों में से एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट समुदाय है। उनके धार्मिक विश्वास, परंपराएँ और संस्कृतियाँ प्रकृति और पर्यावरण से गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं। संथालों का धर्म प्रकृति-आधारित है, और उनका विश्वास है कि देवता और देवी प्रकृति के विभिन्न तत्वों में निवास करते हैं। इस लेख में हम संथाल समुदाय के धार्मिक विश्वासों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

- **संथाल धर्म का आधार**: संथालों का धर्म मुख्य रूप से प्रकृति पूजा पर आधारित है। उनका मानना है कि पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चंद्रमा और अन्य प्राकृतिक तत्वों में देवता और देवी का वास होता है। इन तत्वों को वे सम्मान देते हैं और इन्हीं से अपनी जीवनशक्ति और समृद्धि प्राप्त करते हैं। संथाल समाज का विश्वास है कि इन देवताओं के आशीर्वाद से उनका जीवन सुखी और समृद्ध हो सकता है। संथालों का धर्म किसी एक प्रमुख देवता या ईश्वर में विश्वास नहीं करता, बल्कि उनका विश्वास प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने में है। उनके धार्मिक विश्वासों में कई देवी-देवताओं का उल्लेख है, जिनका महत्व उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा होता है। संथाल धर्म में एक आदिवासी पहचान और प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की प्रवृत्ति है।
- **संथाली देवी-देवता:** संथाल धर्म में कई देवी-देवता पूजित हैं, जो अलग-अलग प्राकृतिक और जीवन के पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें प्रमुख देवी-देवताओं का विवरण निम्नलिखित है:

  ठाकुर जी: ठाकुर जी, संथालों के प्रमुख देवता माने जाते हैं। वे पूरे समुदाय के संरक्षक देवता हैं। ठाकुर जी की पूजा मुख्य रूप से सामूहिक रूप से की जाती है और उन्हें श्रद्धा और सम्मान के साथ पूजा जाता है।

  माता तिलोतमा: यह देवी संथाल समुदाय के लिए महत्वपूर्ण हैं। माता तिलोटमा को घर-परिवार की सुख-शांति और समृद्धि की देवी माना जाता है। वे विशेष रूप से महिलाओं द्वारा पूजा जाती हैं।

  सिंगीर: सिंगीर, संथालों के एक और महत्वपूर्ण देवता हैं। ये देवता संथाल समाज के जीवन के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करते हैं, जैसे कि समृद्धि, स्वास्थ्य और समाज की कल्याणकारी गतिविधियाँ।

  सुरसुरी: यह देवी विशेष रूप से संथालों की कृषि गतिविधियों से जुड़ी हुई हैं। इनकी पूजा वर्षा, फसल की अच्छी पैदावार और कृषि कार्य में सफलता के लिए की जाती है।

  भोंगिया और झोंगिया: ये देवता संथालों की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़े हुए हैं। इन्हें विशेष रूप से त्योहारों और उत्सवों के समय पूजा जाता है।
- **आध्यात्मिक विश्वास और परंपराएँ**: संथालों का विश्वास है कि हर व्यक्ति का आत्मा (आध्यात्मिक अस्तित्व) होता है जो मृत्यु के बाद दूसरे रूप में जन्म लेता है। वे यह मानते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा इस पृथ्वी पर पुनः लौट आती है, और यह चक्र चलता रहता है। संथालों का मानना है कि जीवन और मृत्यु के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है, और यह केवल देवी-देवताओं की पूजा और आशीर्वाद से संभव है। संथालों के धार्मिक आस्थाएँ पारंपरिक पूजा, तंत्र-मंत्र और रिवाजों से जुड़ी हुई हैं। वे पूजा करने के लिए पूजा स्थलों (देवघर) में जाते हैं और विशेष अवसरों पर सामूहिक पूजा करते हैं। इसके अलावा, संथाल समाज में शुद्धता और धार्मिक नियमों का पालन किया जाता है, जिनका उद्देश्य जीवन के हर पहलू में संतुलन और समृद्धि लाना है।
- **संथालों का पारंपरिक धार्मिक पर्व:** संथाल समुदाय में धार्मिक पर्व और उत्सवों का बहुत महत्व है। ये पर्व जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे कृषि, प्रकृति, और पारिवारिक समृद्धि से जुड़े होते हैं। संथालों के कुछ प्रमुख धार्मिक पर्व निम्नलिखित हैं:

  सरहुल: यह संथालों का एक प्रमुख त्योहार है जो वसंत ऋतु में मनाया जाता है। इस त्योहार के दौरान संथाल लोग अपने देवताओं की पूजा करते हैं और सामूहिक रूप से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। सरहुल त्योहार में विशेष रूप से पेड़ों और जंगलों की पूजा की जाती है। इसे प्रकृति और पर्यावरण के प्रति श्रद्धा और सम्मान का प्रतीक माना जाता है।

मौसी-डोम-हूल : यह पर्व संथालों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है। इस पर्व में संथाल समाज अपने पूर्वजों की पूजा करते हैं और उन्हें सम्मान देते हैं। यह पर्व सामाजिक और धार्मिक एकता का प्रतीक है।

नववर्ष : संथालों का नववर्ष भी एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व है, जिसे आमतौर पर 'नवरात्रि' के समय मनाया जाता है। इस समय संथाल समुदाय अपने घरों और खेतों में देवी-देवताओं की पूजा करते हैं और अगले वर्ष के अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

- **संथालों का शमनवाद और तंत्र-मंत्र:** संथाल समुदाय में शमनवाद का प्रभाव भी गहरा है। शमनवाद का अर्थ है कि कुछ व्यक्तियों को विशेष आध्यात्मिक शक्तियाँ और ज्ञान प्राप्त होते हैं, जो उन्हें देवताओं और आत्माओं से संवाद करने की क्षमता प्रदान करते हैं। ये शमन लोग संथाल समुदाय में विशेष धार्मिक भूमिका निभाते हैं और उनका काम पूजा, तंत्र-मंत्र, और समस्याओं के समाधान के लिए देवताओं से सहायता प्राप्त करना होता है। शमन अपने समुदाय के लोगों के लिए चिकित्सा, उपचार और आध्यात्मिक मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। उनके पास प्रकृति से जुड़ी समस्याओं का समाधान करने के विशेष ज्ञान और अनुभव होते हैं।
- **संथालों की मृतक पूजा और परंपराएँ:** संथाल समुदाय में मृतक पूजा की एक खास परंपरा है। वे अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए पूजा करते हैं और उन्हें सम्मान देते हैं। मृतक के घर पर विशेष अनुष्ठान किए जाते हैं, और उनका सम्मान परिवार और समुदाय द्वारा बड़े श्रद्धा भाव से किया जाता है। संथाल समाज का यह विश्वास है कि मृतक की आत्मा तब तक शांति से नहीं रह सकती, जब तक उसे उचित श्रद्धांजलि नहीं दी जाती। संथाल समुदाय का धार्मिक विश्वास और संस्कृति प्रकृति, जीवन, और समृद्धि से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। उनका विश्वास केवल एक आदर्श धार्मिक प्रणाली में न होकर, एक ऐसी जीवनशैली में समाहित है जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास करती है। संथालों की पूजा पद्धतियाँ, उनके देवी-देवता, त्योहार और परंपराएँ उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का एक अभिन्न हिस्सा हैं। इन धार्मिक विश्वासों के माध्यम से संथाल समाज अपनी सांस्कृतिक धरोहर और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करता है, जो उनके अस्तित्व और समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- **संथालों का योगदान और उनकी पहचान:** संथाल समुदाय ने भारतीय समाज को बहुत योगदान दिया है, विशेष रूप से संस्कृति, कला, और साहित्य के क्षेत्र में। उनके संगीत, नृत्य और लोककला ने भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं को समृद्ध किया है। इसके अलावा, संथालों का संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और विभिन्न सामाजिक आंदोलनों में भी महत्वपूर्ण रहा है। संथालों का सांस्कृतिक योगदान आज भी देखा जाता है। उनके परंपरिक गीत और नृत्य भारत के विभिन्न हिस्सों में लोकप्रिय हैं। संथाली भाषा और साहित्य के क्षेत्र में भी उनका योगदान अत्यधिक है। कई संथाली कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस समुदाय की पहचान को उजागर किया है और इसे भारतीय साहित्य के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में प्रस्तुत किया है। आज के समय में संथाल समुदाय अपने अधिकारों और पहचान को लेकर जागरूक हुआ है। हालांकि उनका पारंपरिक जीवन अभी भी काफी हद तक बचा हुआ है, लेकिन तेजी से हो रहे विकास के कारण संथाल समुदाय के लोग भी शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के प्रभाव से प्रभावित हो रहे हैं। उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार की आवश्यकता है, और इसके लिए कई सामाजिक संगठन और सरकारी योजनाएँ काम कर रही हैं। संथालों का एक महत्वपूर्ण पहलू उनका संघर्षशील स्वभाव और अपनी पहचान की रक्षा करना है। वे अपनी पारंपरिक जीवनशैली और संस्कृति को बचाने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं, साथ ही समग्र विकास की दिशा में भी आगे बढ़ रहे हैं। संथाल भारतीय समाज का एक

महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो अपनी समृद्ध संस्कृति, इतिहास, और संघर्ष के कारण भारतीय समाज के विविधतापूर्ण ताने-बाने का हिस्सा बने हुए हैं। उनका योगदान भारतीय संस्कृति, साहित्य, और राजनीति में अद्वितीय है। आज भी संथाल समुदाय अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए संघर्ष कर रहा है और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। संथालों का इतिहास, संस्कृति और संघर्ष भारतीय समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

❖ **संथाल विश्वास और परंपराओं में परिवर्तन:**

संथाल समाज एक महत्वपूर्ण आदिवासी समुदाय है जो भारत के विभिन्न हिस्सों, विशेष रूप से झारखंड, बंगाल, उड़ीसा और बिहार में बसा हुआ है। उनका धार्मिक विश्वास और परंपराएँ प्रकृति और समुदाय के साथ गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं। हालांकि, समय के साथ संथालों के विश्वास और परंपराओं में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, जो उनके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। यह परिवर्तन बाहरी प्रभावों, आधुनिकता, शहरीकरण और सामाजिक-आर्थिक बदलावों के कारण हुए हैं। इस लेख में हम संथाल विश्वास और परंपराओं में आए बदलावों को विस्तार से समझेंगे।

- **प्राकृतिक पूजा से अन्य धर्मों की ओर रुझान:** संथाल समुदाय का पारंपरिक धर्म मुख्य रूप से प्रकृति पूजा पर आधारित था। उनके धार्मिक विश्वासों में प्राकृतिक शक्तियों जैसे सूरज, चंद्रमा, वायु, आकाश, जल, और धरती की पूजा की जाती थी। ये सभी तत्व उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा थे, और वे इनसे जुड़े देवताओं की पूजा करते थे। हालांकि, आधुनिकता और बाहरी धर्मों के प्रभाव के कारण अब कई संथाल परिवारों ने अपनी पारंपरिक पूजा पद्धतियों को छोड़कर हिंदू धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम की ओर रुझान दिखाया है। खासकर, कुछ संथाल परिवारों ने इस्लाम और ईसाई धर्म को अपनाया है, जिसके कारण उनके धार्मिक रिवाज और विश्वासों में बदलाव आया है। ईसाई मिशनरियों के प्रभाव से संथालों के बीच ईसाई धर्म को अपनाने का चलन बढ़ा है। इससे उनकी पारंपरिक पूजा पद्धतियों में बदलाव हुआ और उनकी धार्मिक पहचान पर भी प्रभाव पड़ा। अब कई संथाल लोग चर्चों में पूजा करते हैं और बाइबल को अपने धार्मिक ग्रंथ के रूप में मानते हैं। इसी प्रकार, कुछ संथाल मुस्लिम धर्म को भी अपना रहे हैं और उनकी धार्मिक पहचान अब पारंपरिक संथाली विश्वासों से अलग हो गई है।
- **समाजिक संरचना और विवाह परंपराओं में बदलाव:** संथाल समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना में भी बदलाव आया है। पहले संथाल समाज में विवाह एक परिवार के भीतर ही तय किया जाता था और यह जातिगत संरचनाओं से बंधा होता था। विवाह की परंपराएँ बहुत ही संरचित और निर्धारित होती थीं। लेकिन आजकल संथाल समाज में भी प्रेम विवाह और अंतरजातीय विवाह के मामलों में बढ़ोतरी देखी जा रही है। यह एक महत्वपूर्ण बदलाव है, क्योंकि पहले संथाल समाज में विवाह केवल एक निश्चित समुदाय के भीतर ही होता था, और बाहरी समुदायों से विवाह करने की परंपरा नहीं थी। इसके अतिरिक्त, आधुनिकता के प्रभाव के कारण महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता में भी बदलाव आया है। पहले जहां महिलाओं का स्थान केवल घर और परिवार तक सीमित था, वहीं अब संथाल समाज की महिलाएँ शिक्षा, राजनीति, और कार्यक्षेत्र में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। महिलाएँ अब पारंपरिक परिधानों के बजाय आधुनिक कपड़े पहनने लगी हैं और वे अपनी पसंद और इच्छाओं के अनुसार जीवन जीने लगी हैं।
- **आधुनिक शिक्षा और युवाओं का धार्मिक विश्वास पर प्रभाव:** संथाल समाज में पारंपरिक शिक्षा का अभाव था और अधिकांश संथाल परिवार कृषि कार्य और शिकार पर निर्भर थे। हालांकि, अब शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हुआ है और संथाल समुदाय के बच्चे आधुनिक स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाई कर रहे हैं। यह शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव उनके धार्मिक विश्वासों और

परंपराओं को भी प्रभावित कर रहा है। युवा पीढ़ी पारंपरिक धर्म और संस्कृति को पुराने ख्यालों के रूप में देखती है, और वे इसे बदलने की कोशिश करती है। आधुनिक शिक्षा के कारण संथाल समुदाय के युवा अपने धर्म और संस्कृति पर सवाल उठाने लगे हैं और वे अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने लगे हैं। कई संथाल युवा अपने पारंपरिक विश्वासों को चुनौती देते हैं और आधुनिक धर्मों और विचारों को अधिक अपनाने लगे हैं। इसके परिणामस्वरूप, पारंपरिक धर्म और धार्मिक विश्वासों का पालन पहले जैसे कठोरता से नहीं किया जाता। वे अब मंदिरों और देवस्थलों की बजाय चर्च और मस्जिदों में जाने लगे हैं।

- **आधुनिक जीवन शैली और संथाल परंपराओं में बदलाव**: संथाल समुदाय के जीवन में शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के प्रभाव के कारण उनके पारंपरिक जीवनशैली में भी बदलाव आया है। पहले संथाल समाज के लोग जंगलों में रहते थे और उनके जीवन का मुख्य आधार खेती और शिकार था। लेकिन अब कई संथाल लोग शहरी क्षेत्रों में जाकर मजदूरी और छोटे व्यवसायों में काम कर रहे हैं। इसके कारण उनकी जीवनशैली में भी बदलाव आया है, और अब वे पारंपरिक कृषि कार्य के अलावा अन्य उद्योगों में भी संलग्न हैं। यह शहरीकरण न केवल उनके जीवन के तरीके को बदल रहा है, बल्कि उनकी धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं को भी प्रभावित कर रहा है। अब वे अधिक समय अपने कामों में व्यस्त रहते हैं और पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठान और पूजा-पद्धतियों में कम हिस्सा लेते हैं। इसके अतिरिक्त, संथालों का पारंपरिक नृत्य, संगीत और कला अब शहरीकरण और विकास के कारण कम होता जा रहा है।
- **संथाल संस्कृति और कला में समकालीन बदलाव:** संथालों की पारंपरिक कला और संस्कृति, जैसे संथाली नृत्य, लोक गीत, और कला, पहले गाँवों और आदिवासी क्षेत्रों में ही सीमित रहती थीं। लेकिन अब ये परंपराएँ और कला रूप शहरी और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो रही हैं। संथाल नृत्य और संगीत अब शहरी सभाओं, कार्यक्रमों और विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों में प्रस्तुत किए जाते हैं। हालांकि, इस विकास और प्रसिद्धि के साथ कुछ पारंपरिक रूपों का भी ह्रास हुआ है। पहले संथालों के घरों में केवल मिट्टी के बर्तन और पारंपरिक वस्तुएँ होती थीं, लेकिन अब उनके घरों में आधुनिक उपकरण और वस्तुएँ आने लगी हैं। उनके कपड़े और आभूषण भी अब आधुनिक फैशन के अनुसार बदल रहे हैं। हालांकि संथालों के बीच पारंपरिक कपड़े और आभूषणों की उपयोगिता अभी भी बनी हुई है, लेकिन यह बदलाव दिखाता है कि समाज में धीरे-धीरे बाहरी संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है।
- **धार्मिक अनुष्ठानों और उत्सवों में बदलाव**: संथाल समाज के पारंपरिक उत्सव, जैसे सरहुल, अब पहले जैसे सामूहिक रूप से नहीं मनाए जाते। इसके कारण उत्सवों की पारंपरिक महिमा में भी बदलाव आ रहा है। पहले यह पर्व विशेष रूप से एकता, सामूहिकता और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के रूप में मनाए जाते थे, लेकिन अब यह पर्व शहरीकरण के कारण अलग-अलग परिवारों और व्यक्तियों द्वारा निजी रूप से मनाए जाते हैं। इसके अलावा, धार्मिक अनुष्ठानों में भी बदलाव आया है। पहले संथालों के धार्मिक अनुष्ठान प्रकृति और उनकी परंपराओं से गहरे जुड़े होते थे, लेकिन अब नए धार्मिक रिवाजों और मान्यताओं को अपनाया जा रहा है, जो पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं से अलग हैं।

❖ **निष्कर्ष:**

संथाल समुदाय में समय के साथ कई बदलाव आए हैं, जो उनके विश्वासों, परंपराओं, सामाजिक संरचनाओं और जीवनशैली को प्रभावित कर रहे हैं। इन परिवर्तनों का कारण बाहरी प्रभाव, शहरीकरण, शिक्षा, और आधुनिकता है। हालांकि संथालों की पारंपरिक संस्कृति और धार्मिक विश्वास अब भी जीवित हैं, लेकिन वे धीरे-धीरे बदल रहे हैं। समाज के युवा वर्ग और शहरीकरण के प्रभाव से यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन बदलावों के बावजूद, संथाल समुदाय अपनी सांस्कृतिक

धरोहर और पारंपरिक पहचान को बनाए रखने की कोशिश कर रहा है, जो उनके अस्तित्व और पहचान का अभिन्न हिस्सा है। संथाल समुदाय भारत के आदिवासी समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, और उनकी संस्कृति, परंपराएँ और विश्वास प्राचीन समय से चली आ रही हैं। यह समुदाय पारंपरिक रूप से प्रकृति आधारित विश्वासों में विश्वास करता था, जिसमें पृथ्वी, जल, वायु और अन्य प्राकृतिक तत्वों को देवताओं के रूप में पूजा जाता था। उनका समाज सामूहिकता और संतुलन पर आधारित था, जहाँ परंपराएँ और रीति-रिवाजों को महत्वपूर्ण माना जाता था। हालांकि, समय के साथ और बाहरी प्रभावों के कारण संथालों की धार्मिक मान्यताएँ, सामाजिक संरचनाएँ और जीवनशैली में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं।

संथालों का पारंपरिक धर्म, जो मुख्य रूप से प्रकृति पूजा और पारंपरिक देवी-देवताओं की पूजा पर आधारित था, अब अन्य धर्मों के प्रभाव से बदलने लगा है। ईसाई धर्म और इस्लाम के प्रभाव से संथाल समुदाय के कुछ सदस्य इन धर्मों को अपनाने लगे हैं। इसके साथ ही, शहरीकरण और आधुनिकता ने भी उनके धार्मिक विश्वासों और परंपराओं में परिवर्तन किया है। शिक्षा, विशेष रूप से आधुनिक शिक्षा, ने संथाल समुदाय के युवाओं के विचारों को बदल दिया है, और वे अब अपनी पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देने लगे हैं। इसके परिणामस्वरूप, पारंपरिक पूजा पद्धतियों में कमी आई है, और बहुत से लोग अब मंदिरों की बजाय चर्चों और मस्जिदों में पूजा करने लगे हैं। सामाजिक संरचना में भी महत्वपूर्ण बदलाव आया है। पहले संथाल समाज में विवाहों का आयोजन पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार होता था, लेकिन अब प्रेम विवाह और अंतरजातीय विवाह की प्रवृत्ति बढ़ी है। महिलाएं अब केवल पारंपरिक घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे शिक्षा, राजनीति, और कार्यक्षेत्र में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। यह बदलाव संथाल समाज की प्रगति और विकास की ओर एक कदम है। संथाल समुदाय में शहरीकरण के कारण जीवनशैली में भी बदलाव आया है। पहले वे जंगलों और गाँवों में रहते थे, जहां कृषि और शिकार मुख्य आजीविका के साधन थे। अब वे शहरी क्षेत्रों में जाने लगे हैं और मजदूरी, छोटे व्यवसायों या औद्योगिकीकरण से जुड़ने लगे हैं। इस बदलाव ने उनकी पारंपरिक कला, संगीत, नृत्य और संस्कृति को प्रभावित किया है। हालांकि अब भी संथालों के पारंपरिक कला रूप जैसे संथाली नृत्य और लोक गीतों को कुछ हद तक संरक्षित किया गया है, लेकिन शहरीकरण के कारण इन परंपराओं का स्थान कम हो रहा है। संथालों के विश्वासों और परंपराओं में आए ये परिवर्तन दर्शाते हैं कि कोई भी समाज समय के साथ विकसित होता है और बाहरी प्रभावों के कारण उसकी संस्कृति और जीवनशैली में बदलाव आना स्वाभाविक है। इन परिवर्तनों के बावजूद, संथाल समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को संरक्षित करने की कोशिश कर रहा है। उनकी मूल धार्मिक विश्वासों, सामाजिक एकता, और पारंपरिक जीवनशैली का महत्व अब भी कायम है, और वे अपनी संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। संथालों का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि वे किस प्रकार अपनी पारंपरिक धरोहर और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखते हैं। उनके सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि वे अपने अधिकारों और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष जारी रखें, ताकि वे अपने सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित कर सकें। इस तरह, संथाल समुदाय अपने समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करते हुए एक नई दिशा में आगे बढ़ सकता है।

❖ **संदर्भ सूची**

1. विद्यार्थी, एल. पी., 'संथाल समाज और संस्कृति', कांसेप्ट प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ट संख्या – 24
2. विद्यार्थी, एल. पी., 'संथाल समाज और संस्कृति', कांसेप्ट प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ट संख्या – 61
3. विद्यार्थी, एल. पी., 'संथाल समाज और संस्कृति', कांसेप्ट प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ट संख्या – 78
4. अग्रवाल, रामदास, 'संथाल समाज', के. पी. बागची एंड कंपनी, कोलकाता, पृष्ट संख्या –11
5. अग्रवाल, रामदास, 'संथाल समाज', के. पी. बागची एंड कंपनी, कोलकाता, पृष्ट संख्या - 53
6. अग्रवाल, रामदास, 'संथाल समाज', के. पी. बागची एंड कंपनी, कोलकाता, पृष्ट संख्या - 85